बेहद का वैराग्य - 09

अव्यक्त बापदादा :- (27. 12. 1987)

➳ _ ➳ सदा अपने को 'राजऋषि' समझते हो? एक तरफ है राज्य, दूसरे तरफ है। वैराग - दोनों का बैलेन्स हो। **बेहद का वैराग, वैराग नहीं लेकिन प्राप्तिस्वरूप बना देता है क्योंकि पुरानी दुनिया से वैराग लाते हो और नई दुनिया के मालिक बन जाते हो। तो नाम वैराग है लेकिन मिलती प्राप्ति है। छोड़ने में ही लेना है। एक देते हो और पदम् लेते हो!** तो बेहद का वैराग राज्य भाग्य दिलाने वाला है। एक जन्म के लिए वैराग अनेक जन्मों के लिए सदा श्रेष्ठ भाग्य। ऐसे राजऋषि हो? राजऋषि कुमार और कुमारियों का ही गायन है। ऐसी राजऋषि आत्माओं को विश्व की आत्मायें दिल से प्यार करती है। चैतन्य से भी ज्यादा आपके जड़ चित्रों को प्यार से याद करते हैं। क्योंकि त्याग का भाग्य प्राप्त हुआ है। तो ऐसे राजऋषि आत्मायें हैं। - इस नशे में सदा रहो।

➢➢ राजऋषि

➳ _ ➳ राजा अर्थात मालिक, सबको चलाने का पूरा-पूरा दायित्व अपने सर पर लेना

➳ _ ➳ ऋषि बनना माना सबसे न्यारा होकर सबको देखभाल करना, किसी पर मन का लगाव रहे तो किसी को सुख नहीं दे पाएंगे

→ बाबा ने संजीवनी बूटी दिया पुरानी दुनिया से लगाव मुक्ति का

■ हमें अब बाबा के ऊपर सम्पूर्ण समर्पित होना है, हमारे हृदय पुष्प में कुछ भी फॉरेन पार्टिकल्स ना रहे

➳ _ ➳ राज्य का देखभाल करने के लिए वैराग्य बहुत जरुरी है

➳ _ ➳ **बेहद का वैराग, वैराग नहीं लेकिन प्राप्तिस्वरूप बना देता है**

→ हम पुराने से नए में जाकर बहुत कुछ प्राप्त करते हैं

■ क्योंकि पुरानी दुनिया से वैराग लाते हो और नई दुनिया के मालिक बन जाते हो

▶ नाम वैराग है लेकिन मिलती प्राप्ति है

➳ _ ➳ छोड़ने में ही लेना है

→ कुछ अच्छी चीज को पूर्ण तरीके से एन्जॉय करने के लिए पुराने को मन में कोई लेप-क्षेप नहीं रखना है

■ यहाँ पूर्ण हृदय से छुटकारा पाएंगे तो वहां पूर्ण मजा ले पाएंगे

➳ _ ➳ एक जन्म के लिए वैराग अनेक जन्मों के लिए सदा श्रेष्ठ भाग्य

→ यहाँ एक जन्म, आधा जन्म लौकिक हिसाब चुक्तु कर मन से एकदम बाप के बन जाएँ तो 21 जन्मों का फल मिलेगा

➳ _ ➳ राजऋषि कुमार और कुमारियों का ही गायन है

→ भगवान आकर ब्रह्मा के द्वारा ब्रह्माकुमार-कुमारियों को ही पहला चांस देते हैं

➳ _ ➳ **जो जितना राजऋषि बनते हैं वो उतना बाबा के नजदीक होते जाते हैं**

➳ _ ➳ चैतन्य से भी ज्यादा आपके जड़ चित्रों को प्यार से याद करते हैं

→ क्योंकि त्याग का भाग्य प्राप्त हुआ है

■ ऐसे राजऋषि बनना है और इसी नशे में रहना है

अव्यक्त बापदादा :- (07. 03. 1988)

➳ _ ➳ अभी थोड़ा समय को आगे बढ़ने दो। थोड़े समय में जब अति और अन्त दोनों ही अनुभव होगा तो चारों ओर अन्जान आत्मायें हद के वैराग वृत्ति में आयेंगी और आप भाग्यवान आत्मायें बेहद के वैराग वृत्ति के अनुभव में होगी। अभी तो दुनिया वालों में भी वैराग नहीं है। अगर थोड़ी-बहुत रिहर्सल होती भी है। तो और ही अलबेलेपन की नींद में सो जाते हैं कि यह तो होता ही रहता है। **लेकिन जब 'अति' और 'अन्त' के नजारे सामने आयेंगे तो स्वतः ही हद की वैराग वृत्ति उत्पन्न होगी और अति टेन्शन (तनाव) होने के कारण सभी का अटेन्शन (ध्यान) एक बाप तरफ जायेगा।** उस समय सर्व आत्माओं की दिल से आवाज निकलेगी कि सब का रचयिता, सभी का बाप एक है और बुद्धि अनेक तरफ से निकल एक तरफ स्वतः ही जायेगी। ऐसे समय पर आप भाग्यवान आत्माओं के बेहद के वैराग वृत्ति की स्थिति स्वतः और निरन्तर हो जायेगी और हर एक के मस्तक से भाग्य की रेखायें स्पष्ट दिखाई देंगी। **अभी भी श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों की बुद्धि में सदा क्या रहता? 'भाग्यवान' और 'भाग्य'।**

➢➢ बेहद का वैराग

➳ _ ➳ थोड़े समय में जब अति और अन्त दोनों ही अनुभव होगा

→ तब समय अज्ञानी आत्माओं को वैराग दिलायेगा

■ और हमको अभी से वैराग करना है

➳ _ ➳ अभी तो दुनिया वालों में भी वैराग नहीं है क्योंकि अज्ञानी है

→ अगर थोड़ी-बहुत रिहर्सल होती भी है तो और ही अलबेलेपन की नींद में सो जाते हैं कि यह तो होता ही रहता है

■ **हमको लगता है बाबा तो कब से कह रहा है कुछ भी होता नहीं**

➳ _ ➳ लेकिन जब 'अति' और 'अन्त' के नजारे सामने आयेंगे तो स्वतः ही हद की वैराग वृत्ति उत्पन्न होगी और अति टेन्शन (तनाव) होने के कारण सभी का अटेन्शन (ध्यान) एक बाप तरफ जायेगा।

→ समय हमारा टीचर बने इसके पहले बाबा चाहते हैं हम पहले से ही रेडी बनें, समय पर करने से हम रेडी नहीं रहेंगे और तनाव में फंस जायेंगे

➳ _ ➳ उस समय सर्व आत्माओं की दिल से आवाज निकलेगी कि सब का रचयिता, सभी का बाप एक है और बुद्धि अनेक तरफ से निकल एक तरफ स्वतः ही जायेगी

→ **उस समय बाप के बिना और कोई सहारा दिखाई नहीं देगा**

➳ _ ➳ ऐसे समय पर आप भाग्यवान आत्माओं के बेहद के वैराग वृत्ति की स्थिति स्वतः और निरन्तर हो जायेगी और हर एक के मस्तक से भाग्य की रेखायें स्पष्ट दिखाई देंगी

→ **बाबा ने पहले से ही हमको सुजाक कर दिया**

■ अज्ञानी आत्माओं को तडपता देख उद्धार करने की इच्छा होगी

➢➢ वैराग्य शतकम -श्लोक 54

➽ _ ➽ देहधारियों के भोग विषय सुख सघन बादलों में चमकने वाली बिजली की तरह चंचल है, मनुष्यों की आयु या उम्र हवा से छिन्न-भिन्न हुए बादलों के जल के समान क्षणिक स्थायी नाशवान है और जवानी की उमंग स्थिर नहीं है इसलिए हे बुद्धिमानों धैर्य से चित्त को एकाग्र करके उस योग साधना में लगाओ..

→ **संसार और संसार के सारे पदार्थ क्षणभंगुर, नाशवान और असार है, यहाँ जो दिखाई देता है वह स्थिर ना रहेगा, उसमें जो अथाह जल से भरा हुआ समुन्दर दिखता है किसी दिन मरुस्थल में परिणित हो जायेगा, पानी की एक बूंद भी नहीं रहेगी..**

→ यह बगीचा जो आज इंद्र के शानदार बगीचों की बराबरी कर रहा है, जिसमें हजारों तरह के फूल और फलों के वृक्ष लगे हुए हैं, हौज बने हुए हैं, छोटी-छोटी नहरें कटी हुई है, संगमरमर और सगमुसा के चबूतरे बने हुए हैं, बीच में इंद्रभवन में ऐसा महल खड़े हैं, किसी दिन काँटों का जंगल, उजाड़ हो जायेंगे.. इसमें सियार, लोमड़ी, जरक, पशु बसेरा करेंगे..

→ यह जो नगरी दिखाई देती है इसमें हजारों दो मंजिलें, तीन मंजिलें, चौ मंजिलें, सत मंजिलें, आलिशान महल खड़े हुए हैं, आकाश को चूम रहे हैं, जहाँ लाखों मनुष्यों के आने-जाने और काम-धंधा करने के कारण पीठ से पीठ छिलती है जिस किसी दिन वहां घोर भयानक वन हो जायेंगे, मनुष्यों के स्थान पर सिंह, बाघ, हाथी, गेंडे, हिरण और सियार आ बसेंगे..

→ यह सूर्य जो अपने तेज से तीनों लोकों में प्रकाश फैलाता है, अन्धकार रूप हो जायेगा.. यह अमृत से पूर्ण सुधाकर चन्द्रमा भी शून्य हो जायेगा.. इसकी शीतल चांदनी ना जाने कहाँ विलीन हो जाएगी..

→ जैसे पर्वत एक दिन मिटटी में मिल जायेंगे.. यह ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र भी शून्य हो जायेंगे.. सारा जगत नष्ट हो जायेगा.. ये स्त्री-पुत्र, नाते-रिश्तेदार ना जाने कहाँ छिप जायेंगे.. जिन्होंने जगत की रचना की और अंत में स्वयं नष्ट हो गए.. जो हमारे पैदा करने वालों का ये हाल है तब हमारी क्या गिनती..

→ यह काया जिसे मनुष्य अपना सर्वस्व समझता है, जिसे मलमलकर धोता है, इत्र, फुलेलों से सुवासित करता है, नाना प्रकार के रत्नजडित मनोहर गहने पहनाता है, कष्ट से बचाता है, और सुखी होने के लिए नरम-नरम, मखमली गद्दे पर सोता है, पैरों को तकलीफ से बचाने के लिए जोड़ी-गाड़ी या मोटर में चढ़ता है, एक दिन नष्ट हो जायेगा.. पांच तत्वों से बनी हुई काया पञ्च तत्वों में ही लीन हो जाएगा.. जिस तरह पत्तों पर पड़ी हुए बूंदे क्षण स्थाई होती है उसी तरह ये काया क्षणभंगुर है..

■ **मैं आत्मा इस देह में विराजमान हूँ, भृकुटी के मध्य में, ये शरीर, ये पांच तत्वों में विलीन हो रही है, विलीन होने के बाद अब मैं केवल आत्मा बची हूँ.. और ऊपर चलती हूं..**

→ **<u>दीपक और बिजली का प्रकाश आता-जाता दिखता है पर इस काया का आदि-अंत नहीं दिखता.. यह काया कहाँ से आती है और कहाँ जाती है.. जिस तरह समुन्दर में बुदबुदे उठते हैं और मिट जाते हैं उसी तरह शरीर बनते हैं और क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं.. सच तो ये है की यह शरीर बिजली की चमक और बादल की छाया की तरह चंचल और अस्थिर हैं</u>**

→ **<u>जिस दिन जन्म लिया उसी दिन मौत पीछे पड गई.. अब वह अपना समय देखती है, समय पूर्ण होते ही प्राणों को नष्ट कर देती है.. जिस तरह जल की तरंगे उठ-उठकर नष्ट हो जाती है उस तरह लक्ष्मी आकर क्षण में लीन हो जाती है..</u>**

→ जिस तरह बिजली चमक कर गायब हो जाती है उसी तरह लक्ष्मी दर्शन देकर गायब हो जाती है.. हवा और चकला को रोकना अत्यंत कठिन है, पर शायद कोई उन्हें रोक सके.. आकाश को चूर्ण करना अत्यंत कठिन है पर शायद कोई आकाश को भी चूर्ण करने में समर्थ हो जाए, समुद्र को भुजाओं से तैरना बहुत कठिन है पर शायद कोई तैरकर उसे पार भी कर सकता है.. पर चंचल लक्ष्मी को कोई स्थिर नहीं कर सकता.. जिस तरह अंचली में जल नहीं ठहरता उस तरह लक्ष्मी भी किसी के पास नहीं ठहरती..

→ जिस तरह सांसारिक पदार्थ लक्ष्मी और विषय भोग तथा आयु चंचल और क्षण स्थायी है उसी तरह यौवन और जवानी भी क्षण स्थायी है.. जवानी आती दिखती है पर जाते मालूम नहीं होती.. हवा की अपेक्षा भी तेज चाल से दिन-रात होते हैं उसी तेजी से जवानी झट खत्म हो जाती है और बुढ़ापा आ जाता है.. उस समय विस्मय सा होने लगता है यह शरीर अभी तक सुन्दर और मनोहर लगता था पर जब तक बुढ़ापा नहीं आता, बुढ़ापा आते ही वह उछल-कूद, वह अकड-तकड़, वह चमक-दमक, वह सुर्खी, वह नैनों का रसीलापन ना जाने कहाँ गायब हो जाता है..

→ असल में यौवन के लिए बुढापा राहू है, जैसे चन्द्रमा को जब तक राहू नहीं ग्रसता तब तक प्रकाश रहता है, उसी तरह जब तक बुढ़ापा नहीं ग्रसता तब तक शरीर का सौंदर्य, रूप, लावण्य बना रहता है.. प्राणियों को बाल अवस्था के बाद युवावस्था, युवावस्था के बाद वृध्दावस्था अवश्य आती है.. युवावस्था सदा के लिए नहीं रहती.. अच्छी तरह गहरा विचार करने से जवानी क्षण भर की मालूम होती है..

→ संसार में नाना प्रकार के अच्छे-अच्छे मनभावन पदार्थ दिखाई देते हैं, ये सभी नाशवान है.. ये सब वास्तव में कुछ भी नहीं है केवल मन की कल्पना से इनकी सृष्टि की गई है.. मूर्ख इसमें आस्था रखते हैं ज्ञानी नहीं.. इस जगत में ज्ञानी का जीवन सार्थक और अज्ञानी का जीवन निरर्थक है.. अज्ञानी के जीने से कोई लाभ नहीं.. उसके जीने में अर्थ सिद्धि नहीं होती.. वह वृथा सुअवसर गंवाता है.. मूर्ख मोह के मारे नही समझता की ऐसे मौके बड़ी मुश्किल से मिले हैं.. इस बार चूके तो खैर नहीं.. अज्ञानी अपनी अज्ञानता या मोह के कारण ही नाशवान और दुखों के मूल विषयों की ओर दौड़ता है पर आयु, यौवन और विषयों की क्षण भंगुरता पर ध्यान नहीं देता है.. ये माया मोह नहीं तो और क्या है?

→ सुभाषितावली में लिखा हुआ है की **<u>विभूति (धन, संम्पत्ति) चंचल है, यौवन क्षण भंगुर है, जीवन काल के दांतों में है, तो भी लोग परलोक साधन की परवाह नहीं करते, मनुष्य की यह चेष्टा विस्मयकारक है..</u>**

→ फिरदौसी ने शाहनामा में लिखा हुआ है- मनुष्य इस ना पायदार दुनिया से क्यों दिल लगाते हैं जबकि मौत का नक्कारा (ढोल) दरवाजे पर बज रहा है.. हे मनुष्यों होश करो.. गफलत की नींद छोड़ो.. वह देखो मौत आपका द्वार खटखटा रही है..

→ अब तो मिथ्या संसार का मोह त्यागो, वे जो स्त्री-पुत्र, भाई, बहिन, माता-पिता आदि प्यारे सम्बन्ध दिखाई देते हैं, उस वक्त है जब तक की शरीर का नाश नहीं हुआ.. शरीर का नाश होते ही ये नजर भी नहीं आयेंगे.. यह भी समझ में नहीं आएगा की कहाँ गए और कहाँ से आये थे.. यह बन्धु-बांधवों का मिलना उन यात्रियों, मुसाफिरों की तरह है जो भिन्न-भिन्न काम से सफर करते हुए एक वृक्ष के नीचे आकर ठहर जाते हैं.. और क्षण भर विश्राम लेकर फिर अपनी-अपनी राह पर चल देते हैं.. या उन मुसाफिरों की तरह है जो अनेक स्थानों से आकर एक सराय या धर्मशाला में ठहरते हैं.. और फिर कोई दो दिन या कोई चार दिन रहकर अपनी-अपनी जगह पर चले जाते हैं.. अब वृक्ष के नीचे चंद मिनट ठहरने वालों अथवा सराय के मुसाफिरों का आपस में प्रीती करना क्या अकलमंदी है? जिसका क्षण भर का साथ है उससे दिल लगाना अनेक दुःख मोल लेना है.. उसके अलग होते ही मन में भयानक वेदना होती है.. अतः उसके साथ कोई सरोकार नहीं रखना चाहिए..

→ यह संसार दो स्थानों के बीच का स्थान है, यात्री यहाँ आकर क्षण भर के लिए आराम करते हैं और फिर आगे चले जाते हैं, ऐसे यात्रियों का आपस में मेल बढ़ाना एक दूसरे की मोहब्बत में फंसना सचमुच में दुखोत्पादक है.. समझदार लोग मुसाफिरों से दिल नहीं लगाते.. उनसे प्रेम नहीं करते, उन्हें अपना पराया नहीं समझते, ना उन्हें किसी से राग, ना द्वेष.. ये मेरा, ये मेरा नहीं, ये अपना, ये पराया, वे सबको समदृष्टि या एक नजर से देखते हुए, सहायता करते और उनका कष्ट निवारण करते पर उनसे प्रीती नहीं करते..

→ लेकिन मूर्ख लोग स्त्री-पुरुष, माता-पिता इत्यादि को अपना प्यारा समझते और दूसरों को पराया समझते..

→ **इस जगत में ना कोई अपना है, ना कोई पराया.. ये जगत एक धर्मशाला, सराय है, इस पर हजारों, लाखों पक्षी विभिन्न स्थानों से आकर रात को बसेरा लेते हैं और सबेरे ही अपने-अपने स्थान पर उड़ जाते हैं.. भिन्न-भिन्न स्थानों से आये हुए पक्षियों को क्या रात भर के लिए आपस में नाता जोड़ना चाहिए? हरगिज नहीं.. दूसरों से सम्बन्ध जोड़ना किसी को अपना पुत्र, किसी को अपनी स्त्री, या किसी को माँ या बहन समझकर प्रेम करना तो मूर्खता ही है..**

➳ _ ➳ **जहाँ प्रेम है वहां दुःख हो ही नहीं सकता.. परन्तु यदि किसी के सम्बन्ध से दुःख की उत्पत्ति हो रही है, दुःख का अनुभव हो रहा है, वो प्रेम नहीं वो लगाव है, वो आसक्ति है, वो मोह है और मोह में तो दुःख समाया हुआ है.. संसार के जितने दुखों का मूल है वो मोह है..**

→ सारा संसार ही मोह में फंसा हुआ है.. मैं, घरवाले, परिवार बस.. येही अपने हैं बाकी पराये..

■ यहाँ हद से निकलकर बेहद में स्थित होना है.. बेहद में तो वसुदैव कुटुम्बकम.. सारा संसार ही मेरा है.. सारे संसार की हर एक आत्मा मेरी है.. और दूसरी तरफ कोई भी मेरा नहीं है.. एक तरफ राज एक तरफ ऋषि, राजा भी है तो ऋषि भी..

■ राजा कहता है सारी प्रजा मेरी है और दूसरी तरफ वो ऋषि भी है अनासक्त, वैरागी, किसी से कोई लेना-देना नहीं है.. सब अपने, All are none.. कोई भी मेरा नहीं और सब मेरे हैं..

▶ अगर इसके बीच में ये मेरा है तो वो मेरा नहीं है.. इससे प्यार है तो उसका अच्छा नहीं है, इसके गुण अच्छे लगते तो उसके अच्छे नहीं लगते..

▶ ये अच्छा लगना, अच्छा ना लगना अपेक्ष भाव है..

➳ _ ➳ ब्राहमण जीवन में जितने भी साधन हैं, सब नाशवान हैं, इस ब्राहमण जीवन में जो नए-नए सम्बन्ध बनाते हैं, बाबा ने कहा- केवल एक ही सम्बन्ध है तुम्हारा, केवल एक ही नाता है, भाई और बहन या केवल आत्मा.. इसके अतिरिक्त और कोई दूसरे सम्बन्ध अगर बनाये उससे दुःख की ही उत्पत्ति होगी.. चाहे मैत्री का सम्बन्ध हो, मां-बच्चे का सम्बन्ध हो, बहन-भाई का सम्बन्ध हो, उसमें से दुःख की ही उत्पत्ति होगी..

→ ये संस्था बहनों की संस्था है अगर उसमें इस तरह से सम्बन्ध जोड़े जाएँ तो उनके ऊपर आक्षेप कुछ ना कुछ होगा.. कलंक उनके माथे पर आयेगा..

■ यहाँ के जो भी वैभव हैं ब्राहमण बनने के बाद में, वैभवों की तरफ आकर्षण, स्थान की तरफ आकर्षण, ये सब भी दुखदायी है.. साधन, व्यक्ति, वस्तु, गुणों की तरफ आकर्षित हो जाना, किसी के विशेषताओं की तरफ आकर्षित हो जाना

▶ साधनों को केवल सेवा अर्थ यूज़ करना है

▶ मन में केवल वैराग्य जाग्रत करना है उसके लिए- ये देह क्षण भंगुर है, ये वैभव क्षण भंगुर है, ये यौवन, ये जवानी, ये युद्ध क्षण भंगुर है, बुढ़ापा, मृत्यु तो आना ही है, किसी भी क्षण मृत्यु आ सकती है..

▶ वास्तव में तुम्हारा जन्मदिन का जो समारोह है वो मृत्यु का समारोह है.. आयु छोटी हो रही है

▶ अभी शक्ति है शरीर में अभी योग कर सकते हैं, तपस्या कर सकते हैं, मनन कर सकते हैं, चिन्तन कर सकते हैं, जैसे-जैसे आयु बढती जाती है बुद्धि की क्षमता भी कम होती जाती है, हड्डियाँ नरम, ढीली होती जाती है.. एक जगह बैठ नहीं सकेंगे.. थकान जल्दी होती है

▶ इसके लिए बाबा के जो महावाक्य हैं उसको केवल पढना नहीं है, उसको साथ-साथ कार्य में लगाना है, यूज़ करना है, अंतर्मुखी होकर ये सारे कार्य करने हैं..

▶ इसके लिए जीवन की क्षणभंगुरता का चिन्तन तो होना ही चाहिए.. एकांत में बैठकर चाहे 15 मिनट, ये सब अनित्य है,

▶ बाबा ने कहा- ये का प्रकाश बाहर का है, ये दीपमाला से कोई सुख नहीं है, बाबा को कोई स्थूल दिवाली नहीं चाहिए, आत्मिक दिवाली चाहिए.. आत्मा की ज्योत जग जाए, तीसरा नेत्र खुल जाय, एकांत में बैठकर, हम बाप से वर्सा ले रहे हैं इसमें तुम्हारी ख़ुशी है..

- ये सब संसार वालों के लिए है, जो पुरुषार्थी नहीं है उनके लिए खेलकूद, मौज ये जरुरी है.. हम राजऋषि हैं हमारा काम है तपस्या करना.. ये सब संसार वाले भी करते हैं.. जो हो रहा है वो भी सत्य है, पर तुम्हें क्या करना है ये देख लो.. 20 प्रकार की चीजें बनी है खाने के लिए तो तुमको जबरदस्ती है खाने के लिए?